ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 121-124
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

भारत में इस्लाम के प्रसार के आर्थिक आधारः सल्तनतकाल के सन्दर्भ में

प्रतिभा शर्मा
एसो0 प्रोफेसर– इतिहास विभाग श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ, (उ0प्र0), भारत

भारत में इस्लाम का प्रसार शांतिपूर्वक व बलपूर्वक दोनों तरीकों से हुआ था । कुछ हिन्दुओं द्वारा सामाजिक समानता प्राप्त करने के लिए वहीं कुछ हिन्दुओं द्वारा आर्थिक प्रगति के नवीन अवसर प्राप्त करने के लिए, पद, प्रतिष्ठा, सम्मान प्राप्त करने के लिए धर्मान्तरण किया। जहाँ एक ओर परम्परागत व्यवसायों में लगे गरीब लोग इस्लाम की ओर आकर्षित हुए वहीं दूसरी ओर कुछ नवीन व्यवसायों को अपनाने के कारण हिन्दुओं ने इस्लाम स्वीकार किया। प्रस्तुत शोध पत्र सल्तनतकाल में मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि के अनेक आधारों में से एक प्रमुख आधार–आर्थिक आधार पर प्रकाश डालेगा कि किस प्रकार हिन्दुओं ने अपनी आर्थिक उन्नति व रोजगार के अवसरों को प्राप्त करने के लिए इस्लाम स्वीकार किया।

छठी शताब्दी में इस्लाम का जन्म और प्रसार अपने आप में एक अभूतपूर्व घटना है। बहुत ही कम समय में वह विश्व के अनेक देशों तक पहुँच गया। यद्यपि मौहम्मद साहब के जीवनकाल में अरब में इस्लाम के प्रसार की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी थी जिसे उनके बाद खलीफा हजरत अबू बक्र, हजरत उमर, हजरत उस्मान, हजरत अली ने भी एक पवित्र धार्मिक उद्देश्य के रूप में अपना लिया था और प्रयास प्रारम्भ कर दिये।

भारत में इस्लाम के प्रचार व प्रसार के विविध आधार थे। यहाँ धर्मपरिवर्तन शांतिपूर्वक व बलपूर्वक दोनों तरीकों से हुआ था। शांतिपूर्ण तरीकों का अनुकरण अरब व्यापारियों, मुस्लिम सन्तों, मौलवियों आदि द्वारा किया गया जबकि दूसरी श्रेणी के तरीकों का प्रयोग अरबों व तुर्क आक्रमणकारियों व विजेताओं द्वारा किया गया। कुछ हिन्दू सामाजिक समानता प्राप्त करने के लिए तो कुछ जाति से बहिष्कृत कर दिये जाने के कारण, कुछ उच्च पद, पदवी, नौकरी आदि पाने के कारण कुछ नवीन व्यवसायों को अपनाने के कारण वहीं कुछ निम्न व्यवसायों को लगे होने के कारण, कुछ सूफी व अन्य संतों के प्रभाव के कारण और कुछ मुस्लिम षासकों द्वारा बलपूर्वक बन्दी बनाये जाने पर या डराये जाने पर धर्मान्तरित हो गये।

भारत का दूसरे देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध प्राचीन समय से ही प्रारम्भ हो गया था। भारतीय व्यापारिक समुदाय को अपने कार्यों में प्रवीण होने के बावजूद भी आयात – निर्यात बहुत कुछ विदेशियों के लिए छोड़ना पड़ा था। इसी सन्दर्भ में अरब व्यापारियों, सौदागर और नाविकों ने व्यापार व वाणिज्य क्षेत्र में पूर्वी से पश्चिमी भारत के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया। इस्लाम अभ्युदय से पूर्व ही भारत के पश्चिमी तटों पर अरब व्यापारियों की बस्तियाँ बनने लगीं थीं। तात्कालिक भारतीय शासकों द्वारा भी अरबों के स्वागत का बहुत बड़ा कारण व्यापारिक ही था क्योंकि वे अपने राज्य के व्यापार व वाणिज्य में सुधार के लिए उत्सुक थे। परिणामस्वरूप भारत के द्वार बिना भेदभाव के सभी विदेशियों के लिए खोल दिये थे। भारतीय व्यापारियों ने भी इन विदेशी व्यापारियों के साथ सहयोग किया परिणामस्वरूप उनकी संख्या में वृद्धि होने लगी। जब अरबों द्वारा इस्लाम ग्रहण किया गया तो वे मात्र व्यापारिक लाभ कमाने वाले न रहकर इस्लाम के प्रचारक भी हो गये। संभवतः इन्हीं व्यापारियों के माध्यम से मुस्लिम की भारत में प्रारम्भिक बस्तियाँ बनीं होगी। उन्होंने जमीन अधिगृहीत की और अपने धर्म का स्वतन्त्रतापूर्वक अनुसरण किया। तुर्कों के शासन स्थापना करने से पूर्व ही इस्लाम, भारत में फैल चुका था। उत्तरोत्तर मुस्लिमों की संख्या में बृद्धि होती ही जा रही थी, जिसका प्रमुख कारण हिन्दुओं द्वारा किया जाने वाला धर्म परिवर्तन था।

यदि सम्पूर्ण धर्मान्तरण के स्वरूप पर विचार किया जाय तो यह तथ्य निकलता है किसी एक वर्ग या समुदाय के धर्मान्तरण का कारण हिन्दू जातिगत व्यवस्था का अत्याचापर नहीं था बल्कि मुस्लिम शासकों और समाज द्वारा रोजगार के आर्थिक प्रगति के नये अवसर प्रदान करने का प्रलोभन भी था। आर्थिक प्रलोभन व रियायतें प्राप्त करने के लिए आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए अथवा नवीन व्यवसायाओं को अपनाने के कारण हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों ने इस्लाम ग्रहण किया। बढ़ती जनसंख्या व नयी संस्कृति के साथ समायोजन ने ऐसे बहुत से व्यवसायों को जन्म दिया जिससे हिन्दू समाज पूरी तरह से अपरिचित था। जहाँ एक ओर परम्परागत व्यवसायों में लगे गरीब लोग इस्लाम की ओर आकर्षित हुए वहीं दूसरी ओर कुछ नवीन व्यवसायों को अपनाने के कारण हिन्दू इस्लाम स्वीकार करने लगे। इनमें प्रमुख हैं–जुलाहा, फकीर, धुनियाँ, तेली, नाई, दर्जी, कसाई, धोबी, मनिहार, शिल्पकार आदि। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन जातियों व वर्गों के धर्म परिवर्तन के स्वरूप एक दूसरे से बहुत कुछ अलग भी हैं।

अनुरूपी लेखक

हिन्दू समाज में भिखारियों की कोई जाति अलग से नहीं है परन्तु कुछ हिन्दुओं ने बिना कुछ किए भोजन प्राप्त करने के लिए धर्म परिवर्तन कर लिया। जो लोग थोड़ी सी भी मेहनत नहीं करना चाहते थे वे आसानी से धर्म परिवर्तन कर मुत में भोजन प्राप्त करते थे। सम्पूर्ण सल्तनतकाल में सुल्तानों व अमीरों की इन भिखारियों के प्रति सहानुभूति दिखाई देती है वे इनको भोजन, दान, वस्त्र आदि निरन्तर प्रदान करते थे। तुगलक काल में यह वर्ग बहुत अधिक सुविधाएं प्राप्त करने वाला वर्ग था, जहॉं तक कि फीरोज तुगलक के समय में तो ये रिश्वत तक देने की स्थिति में थे। जहॉं एक ओर यह सुविधाएं जनसामान्य को धर्म–परिवर्तन के लिए आकर्षित करती थीं दूसरी ओर हिन्दू धर्म की सामाजिक संकीर्णता भी इन भिखारियों के धर्म–परिवर्तन के लिए जिम्मेदार थी क्योंकि कुछ भिखारियों को मुसलमानों के साथ का भोजन ग्रहण करने के कारण भी मुसलमान बनना पड़ा। यदि एक बार किसी ने भी यह ग्रहण किया तो वह अपवित्र माना जाता था और वह हिन्दू धर्म से बहिष्कृत हो जाता था।

यद्यपि मुस्लिम समाज का हज्ज़ाम और हिन्दू समाज का नाई समानान्तर है परन्तु हज्ज़ाम बन जाने पर उसको आर्थिक उत्थान के अवसर अधिक मिल सकते थे साथ ही शासकीय वर्ग से निकटता का आभास भी धर्मान्तरण के उपरान्त ही मिल सकता था। अतः हिन्दू नाईयों के लिए बड़ी संख्या में धर्मान्तरण किया।

महावतों के धर्मपरिवर्तन के सन्दर्भ में भी यही आर्थिक प्रगति व उत्थान का अवसर प्रमुख रहा है। सल्तनत की स्थापना के समय से ही सुल्तान व अमीर हाथियों को एकत्रित करने में विशेष रुचि लेते थे और युद्ध के समय धन सम्पत्ति के साथ हाथी प्राप्त करने पर भी बल देते थे। हाथी युद्ध के साथ–सयाथ मनोरंजन के साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता था क्योंकि हाथी की दौड़ एक प्रमुख खेल था। अतः हाथियों के साथ–साथ उनके महावत भी सुल्तान व अमीरों के संरक्षण में रहते थे। अतः हर समय सुल्तान के महल और किलों में रहने व उनसे लाभ लेने के उद्‌देष्य से वे आसानी से धर्मान्तरित हो जाते थे इससे वे सुल्तानों के और भी अधिक निकट हो जाते थे।

यही स्थिति कसाइयों के सन्दर्भ में भी है। हिन्दू कसाइयों की कोई विषेश जाति नहीं थी जबकि मुस्लिमों के आने से पूर्व भी हिन्दू मॉस बेचने का कार्य करते थे। ऐसे हिन्दू जो कि मॉस के कार्य में लगे हुए थे वे अपने व्यवसाय के उत्थान व मुसलमानों को अपने उपभोक्ता बनाने के लिए धर्मान्तिरित हो गये। वहीं कुछ हिन्दुओं ने मॉस काटने व बेचने के व्यवसाय में रोजगार के नये अवसर तलाशने के लिए भी धर्मान्तरण किया और मुस्लिम होकर कसाई का व्यवसाय अपनाया।

इसी प्रकार मछली पकड़ने का व्यवसाय भी भारत में प्राचीन समय से ही किया जा रहा है परन्तु मछुआरों द्वारा किया गया धर्मपरिवर्तन व्यावसायिक जरूरत के लिये किया गया धर्मपरिवर्तन है। एक उदाहरण के द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है–''कालीकट के जमोरों ने आदेश दिया कि मुछआरों के परिवार में एक या अधिक पुरुषों को मुलसमान बन जाना चाहिए क्योंकि मुस्लिम अधिकारी के अधीन जहाज पर कार्य करने वाले लोगों के धर्म में कुछ भिन्नता नहीं होनी चाहिए।'' अतः बड़ी मात्रा में मछुआरों द्वारा धर्म परिवर्तन किया गया।

सल्तनतकालीन सुल्तान व अमीर वर्ग परिधानों के विशेष शौकीन थे क्योंकि मुस्लिम परिधानों में बहुत विभिन्नताएं थीं अतः वे निरन्तर नवीन प्रयोगों को इस क्षेत्र में तरजीह देते थे। अपने इसी शौक की आपूर्ति के लिए उन्होंने परिधान से सम्बन्धित षाही कारखाने खोले गए। इनमें कुशल दर्जियों की विदेशों से बुलाकर नियुक्त गया। अतः हिन्दू दर्जियों ने विदेशी दर्जियों के समान स्थान प्राप्त करने के लिए धर्मान्तरण को चुना ताकि वे भी उन विदेशी दर्जियों की श्रेणी में आ जायें और कारखानों में उनकी नियुक्ति भी हो सके।

इसके अतिरिक्त वस्त्र उद्योग से जुड़े अन्य वर्ग जैसे धुनिया (रूई धुनने वाला), रंगरेज (कपड़ा रंगने वाला) जुलाहा (कपड़ा बुनने वाला) भी दर्जी के साथ जुड़े हुये थे बल्कि दूसरे शब्दों में कहा जाय तो एक दूसरे के कार्यों पर निर्भर थे। अतः आपस में सम्बन्ध रखने के कारण धर्म–परिवर्तन को बहुत बल मिला। धुनिया, रंगरेज, जुलाहों ने बड़ी संख्या में धर्मान्तरण किया। रंगरेज एक नवीन जाति बन गई और कपड़ा रंगाई का एक विशेष व्यवसाय बन गया जो कि पूर्णतः मुस्लिम थी। इसमें यह तथ्य भी ध्यान रखने योग्य है कि इन वर्गों का धर्मान्तरण शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक हुआ क्योंकि वहॉं इस्लाम स्वीकार करने के बाद आर्थिक उन्नति के अधिक अवसर थे क्योंकि वे अब मुस्लिम शासक व सम्भ्रान्त वर्ग की आवश्यकता के अनुरुप अच्छी गुणवत्ता व फैशन की पोशाकें उनके सम्पर्क में रहकर बना सकते थे।

कुछ हिन्दू विदेशी व्यापारियों के अन्तर्गत व्यापार करने के कारण भी मुस्लिम बने जिनमें खोजा, बोहरा, बंजारा आदि जाति प्रमुख रूप से है।

कुछ हिन्दू करों के अतिरिक्त बोझ से मुक्ति प्राप्त करने के लिए भी इस्लाम ग्रहण करने लगे। इसमें करों में प्रमुख कर 'जजिया' था। जजिया की मात्रा व वसूली का ढंग इतना अपमानजनक था कि लोग इससे बचने के लिए धर्मान्तरित हो जाते थे। अतः जजिया से मुक्त होने व अपने आर्थिक स्तर को उच्च करने के लिए धर्मातरण एक विशेष साधन था। ऐसे ही अनेक धर्मान्तरण से सम्बन्धित उदाहरण हमें भू–राजस्व के न जमा कर पाने वाले हिन्दूओं के भी प्राप्त होते हें जो कि समय पर भू–राजस्व जमा नहीं कर पाते थे परिणामस्वरूप उन्हें इस्लाम स्वीकार करने के बाद राहत मिल जाती थी।

यदि हम सल्तनतकालीन अमीरों की संरचना पर ध्यान दें तो पायेंगे कि मुसलमानों के ही अलग–अलग वर्ग इसमें कुछ रूप से षामिल थे। अतः हिन्दू सरकारी नौकरियॉं पद, आय व प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए धर्मान्तरण कर लिया करते थे। हजारों निःसहाय व सुरक्षित हिन्दुओं ने जीवनयापन के नवीन स्रोत ढूँढ निकालने व अपने पारिवारिक जीवन को सुरक्षित रखने के विकल्प के रूप में इस्लाम ग्रहण किया। सम्पूर्ण सल्तनतकाल में यह प्रक्रिया जारी रही।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अल्बरुनी–किताब–उल–हिन्द अनु0 एडवर्ड सी0साशो, 2 खण्ड–, लन्दन,1911
2. मिनहाजुद्दीन सिराज– तबकात–ए–नासिरी अनु0 मेजर रेवर्टी, खण्ड–I-II एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता द्वितीय प्रिन्ट–2010
3. जियाउद्दीन बरनी– 1. तारीख–ए–फिरोजशाही–अनु0 मुहम्मद हबीव कलकत्ता, अलीगढ़ 2005
   2. फतवा–ए–जहॉंदारी–अनु0 मुहम्मद हबीव, इलाहाबाद 1961
4. अमीर खुसरो– खजायन–उल–फुतूह अनु0–वाहिद मिर्जा, लाहौर 1975
5. याहिया बिन अहमद सरहिन्दी–तारीख–ए–मुबारकशाही अनु0 के0के0 बसु, बड़ौदा 1932
6. इब्नबतूता– रेहला अनु0 मेंहदी हसन, बड़ौदा 1953
7. इसामी– फुतुह–उस सलातीन सं0–आगा मेंहदी हुसेन , आगरा 1938
8. अमीर खुसरो –नूह सिपेहर सं0–मु0 वाहिद मिर्जा, लंदन, 1950
9. सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी – 1. आदि तुर्क कालीन भारत, अलीगढ़ 1956
   2. खिलजी कालीन भारत, अलीगढ़ 1954
   3. तुगलक कालीन भारत भाग–1 अलीगढ़ 1957
   4. तुगलक कालीन भारत भाग–2 अलीगढ़ 1957
   5. उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग –I-II अलीगढ़ 1958 , 1959

अंग्रेजी स्त्रोत :–

1. Rueben Levy - The Social Structure of Islam, Cambridge, 1957
2. R.C. Majumdar-(ed.) -The History and Culture of the Indian. People, Vol.VI (The Delhi Sultanate) Bombay , 1966
3. M.Mujeeb - The Indian Muslims, London, 1967
4. Pushpa Prasad - Sanskrit Inscription of Delhi Sultnate-1191-1526, Delhi 1990
5. R.P. Tripathi - Some Aspects of Muslims Administration 2nd ed. Allahabad , 1956
6. B.S. Yadav - Society and Culture in Northern Indian in the Twelfth Century, Allahabad, 1973.
7. B.H. Baden Powell - Indian village Community, London 1896.
8. H.M. Elliot and J.Dowson- The History India as told by its own Historian, 8 Vols. London 1867-77
9. A.B.M. Habibullah - The Foundation of Muslim Rule in India , Allahabad-1961

11. K.A. Nizami - Some Aspects of Religion and Politics in India during 13th Century, Aligarh-1965
12. M.Habib and Nizami - A Comprehensive History of India Delhi Sultanate Vol. 5 New Delhi 1970
13. K.S. Lal - Growth of Muslim Population in Medieval India, Delhi, 1973
- History of Khilji, Delhi, 1980
14. M.Habib - Sultan Mahmud of Ghaznin, Aligarh 1956
15. Richard M. Eaton - India's Islamic Traditions , New Delhi-2003
16. K.L. Srivastave- -Position of Hindus under the Delhi Sultanate- New 1980 .
17. Raziuddin Aquil -Suffism and Society in Medieval India, New Delhi -2010

*****